राज्य की भूमिका और जनजातीय विकास : जिला बलरामपुर उत्तर प्रदेश में थारू जनजातियों का आर्थिक शैक्षिक एवं स्वास्थ्य स्थिति का एक अध्ययन

BABASAHEB BHIMRAO AMBEDKAR UNIVERSITY
LUCKNOW
प्रज्ञा शील करूणा
ESTABLISHED 1996

बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय लखनऊ से राजनीति विज्ञान विषय में पीएच० डी० की उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध-सारांशिका

शोधार्थी

संजय कुमार
नामांकन संख्या 357 / 17

शोध निर्देशक

प्रो० सार्तिक बाघ
राजनीति विज्ञान विभाग

राजनीति विज्ञान विभाग
अम्बेडकर अध्ययन विद्यापीठ
बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)
लखनऊ -226025

वर्ष - 2023

'kks/k lkjkf'kdk (Research Summary)

jkT; dh Hkkfedk vkj tutkrh; fodkl :

ftyk cyjkeiqj mÙkj izns'k esa Fkk: tutkfr;ksa dk vkfFkd 'kSf{kd ,oa LokLF; fLFkfr dk ,d v/;;u

---

v/;;u dh fo"k;oLrq (Contents of Study) %&

भारतीय संविधान ने राष्ट्र पर यह उत्तरदायित्व डाला है कि वह अनुसूचित जनजातियों के शैक्षिक तथा आर्थिक हितों का वि”ोष ध्यान रखने के साथ–साथ सामाजिक अन्याय तथा शोषण से उनकी रक्षा करे। उनका विकास राष्ट्रपति के वि”ोष दायित्वों में से एक है। अनुसूचित क्षेत्रों के प्र”ाासन व विकास का सर्वेक्षण करके उसकी रिपोर्ट राष्ट्रपति को भेजना सभी राज्यों का उत्तरदायित्व है। संविधान के अनुच्छेद 275 में अनुसूचित व जनजातिय क्षेत्रों के प्र”ाासन को स्तर पर लाने तथा विकास कार्यक्रमों को कार्यान्वित करने के उद्दे”य से अनुदान का प्रावधान है जो कि केन्द्र सरकार राज्य सरकारों को देती है। इसके अतिरिक्त प्रत्येक योजना में अनुसूचित जनजाति के पिछड़ेपन को दूर करने तथा उनके कल्याण के लिए वि”ोष धनरा”िा का प्रावधान किया जाता है। यह प्रावधान इस विचार से किये गये है जिससे कि यह सामान्य विकास के प्रारूप में एक योगात्मक भूमिका निभायेंगे तथा जनजातिय संख्या तथा क्षेत्रों के कल्याण में सहायक होंगे। अनुसूचित क्षेत्र वाले राज्य के राज्यपाल, राष्ट्रपति को हर वर्ष या जब भी राष्ट्रपति मांगेगा उसे रिपोर्ट देंगे। यह रिपोर्ट राज्य के अनुसूचित क्षेत्र के प्र”ाासन और संघ के कार्यकारी अधिकारों के तहत क्षेत्र के प्र”ाासन और राज्य को निर्दे”ा देने के सम्बन्ध में होगी। जनजाति इलाकों वाले राज्यों में जनजातीय सलाहकार परिषद स्थापित की जायेगी। बलरामपुर के थारू जनजातियों की सांस्कृतिक धरोहर बचाने के लिए योगी सरकार ने 2018 के बजट में 50 करोड़ रूपये की सहायता प्रदान की है।

'kks/k iz'u (Research Questions)-

1. बलरामपुर जिले में स्थित थारू जनजातियों की शैक्षिक स्थिति क्या है?

2. इन जनजातीय लोगों की स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याएँ क्या हैं?
3. थारू जनजातीय लोगों की आर्थिक स्थिति कैसी है?
4. केन्द्र एवं राज्य सरकार द्वारा जनजातीय विकास हेतु कौन–कौन सी योजनायें चलाई जा रही हैं?

उपर्युक्त शोध प्रश्नों के आधार पर शोधकर्ता ने निम्नलिखित शोध उद्देश्यों का निर्माण किया जो कि इस प्रकार हैं–

'kks/k mnns'; **(Research Objectives)** &

1. बलरामपुर जिले में स्थित थारू जनजातियों की शैक्षिक स्थिति का अध्ययन करना।
2. थारू जनजातीय लोगों की स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं का आकलन करना।
3. थारू जनजातीय लोगों की आर्थिक स्थिति का उल्लेख करना।
4. केन्द्र एवं राज्य सरकार द्वारा जनजातीय विकास हेतु जो योजनायें चलाई जा रही हैं उसका विश्लेषण करना।

उपर्युक्त शोध उद्देश्यों के आधार पर शोधार्थी ने निम्नलिखित शोध परिकल्पना तैयार की है–

'kks/k ifjdYiuk ¼**Research Hypothesis**½&

- थारूओं के पास पर्याप्त भूमि व व्यवसाय नहीं है। जिससे इनको आजीविका संकट सदैव बना रहता है।
- इनके रहन–सहन जंगली क्षेत्रों में होने के कारण पेय जल एवं संतुलित भोजन की समस्या बनी रहती है।
- सरकारी नीतियाँ जो इनके लिए लागू की जाती हैं, इनके पास तक इसकी सीधी पहुँच नहीं है।

'kks/k fof/k ¼Research Methodology ½&

प्रस्तुत शोध अध्ययन में अन्वेषणात्मक (Investigative) सह विवरणात्मक (Descriptive) विधि का प्रयोग किया गया है। थारू जनजाति पर अध्ययन करने के लिए Ethnogrophics (नृवं"ा विज्ञान) का सहयोग लिया गया है। नृवं"ा विज्ञान वह है जो लोगों और संस्कृतियों का व्यवस्थित अध्ययन करता है। यह संस्कृति की घटनाओं का पता लगाने के लिए एक रूपरेखा प्रस्तुत करती है जहाँ शोधकर्ता अध्ययन को विषय के दृष्टिकोण से समाज को देखता है। नृवं"ा विज्ञान मानवीय समाजों और संस्कृतियों पर अनुभवजन्य ऑकड़ों को प्रस्तुत करता है। जनजाजीय समाज एवं अन्य समाजों के अध्ययन में इसी विधि का प्रयोग करके अध्ययन किया जाता है।

v/;k;hdj.k ¼Chapterisation½&

1. परिचय।
2. भारत में जनजातियों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति।
3. थारू जनजातियों की सामाजिक–आर्थिक संरचना।
4. जनजातीय तथा थारू जनजातियों के लिए केन्द्र एवं राज्य सरकार की योजनायें।
5. थारू जनजातियों की शिक्षा, स्वास्थ्य एवं अर्थव्यवस्था का एक अध्ययन।
6. निष्कर्ष एवं सुझाव।

vkdMk d: l:dyu dh fof/k (Methods of Data Collection)&

शोधकर्ता ने अध्ययन क्षेत्र से थारू जनजातियों के 206 परिवारों से प्रत्येक परिवार से एक सदस्य को उत्तरदाता के रूप में चयन किया है। जो परिवारो की संख्या और शोध अवधि को ध्यान में रखते हुए उद्देश्यात्मक नमूना पद्धति (Purposive Sampling Method) का प्रयोग करते हुए चयनित है। जिनमें कुल 18 गाँवों को सम्मिलित किया गया है।

vk¡dM+ksa d fo'y"k.k dh fof/k (Methods of Data Analysis) &

क्षेत्र अध्ययन से प्राप्त आँकड़ों के विश्लेषण हेतु वर्गीकरण तथा सारणीयन प्रणाली का प्रयोग किया गया है। विभिन्न तथ्यों के बीच अलग–अलग प्रकार विश्लेषण करके निष्कर्ष निकाला गया है। तथ्यों को सरलतापूर्वक ग्राह्य बनाने के लिए रेखाचित्र भी बनाये गये हैं।

fu"d"kZ (Conclusion)&

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध थारू जनजातीय समाज के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, शैक्षणिक, स्वास्थ्य एवं कृषि व व्यवसाय के बदलाव से सम्बन्धित है। हमने इस शोध के माध्यम से यह जानने का प्रयास किया है कि भारतीय सभ्य समाज में जनजातीय समाज किस प्रकार अग्रसर हो रहा है। शैक्षिक दृष्टिकोण से थारू जनजातीय समाज अब पारम्परिक शिक्षा व्यवस्था से आगे निकल रहा है, इनमें शिक्षा के प्रति रूचि बढ़ रही है।

स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से जनजातिय समाज में अब काफी सुधार देखने को मिल रहा है। वस्त्रों की उपलब्धता बढ़ने के कारण इनके पास पर्याप्त वस्त्र हो चुके हैं जो कि पारम्परिक तरीकों में काफी सुधार प्रतीत हो रहा है। लम्बे अरसे तक चलने वाली बिमारियों का प्रभाव कम हो रहा है। संतुलित भोजन की उपलब्धता सुलभ होती जा रही है।

अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में भी थारू जनजातीय समाज सभ्य समाजों के निकट होते जा रहे हैं। कृषि में आधुनिक तकनीकों का प्रयोग दिखाई दे रहा है जिससे कृषि में कम लागत से ज्यादा उत्पादन हो रहा है। पारम्परिक व्यावसायों के साथ–साथ जनजातीय समुदाय आधुनिक व्यवसायों में रूचि दिखाने लगे है। जिससे समृद्ध प्रदेशों की ओर पलायन की गति तीव्र होती जा रही है।

भारत सरकार एवं राज्य सरकार द्वारा प्रायोजित योजनाओं का विकास दिखाई देने लगा है जो जनजातीय जीवन के शिक्षा, स्वास्थ्य एवं

अर्थव्यवस्था को प्रभावित कर रहा है। जिससे थारू समुदाय के लोग लाभान्वित हो रहे हैं।

तथ्य संग्रह से पता चलता है कि थारू समुदाय में शिक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ रही है जिससे भविष्य में इनको अधिक ज्ञार्नाजन में सहायता मिलेगी।

तथ्यों के संकलन से यह निष्कर्ष निकलता है कि जनजातीय समाज में स्वास्थ्य के प्रति चेतना बढ़ रही है लोग खान–पान की व्यवथा में सुधार कर रहे हैं भोजन में हरी साग–सब्जियों एवं माँस–मछली का इस्तेमाल कर रहे हैं। भयंकर बिमारियों का प्रकोप कम हो रहा है।

तथ्य संकलन से यह निष्कर्ष निकलता है कि थारू समाज में अर्थव्यवस्था को सुधारने का लगातार प्रयत्न किया जा रहा है कुछ पिछड़े हुए इलाकों में अर्थव्यवस्था की गति धीमी दिखाई देती है। जहाँ लोग जंगलों से घिरे हुए हैं वहाँ पारम्परिक व्यवसाय की अधिकता दिखाई देती है।

अध्ययन से यह पता चलता है कि सरकारी योजनाओं का विकास भलीभाँति थारू समुदाय में नहीं हो पाया है क्योंकि तथ्य संग्रह करते समय हमने देखा कि कुछ जनजातीय लोग ऐसी जगहों पर बसे हैं जहाँ आज भी बरसात के दिनों में घुटने तक कीचड़ में चलकर जाना पड़ता है।

तथ्य संग्रह से यह निष्कर्ष निकलता है कि जनजातीय समुदाय का अभी भी अपने पारम्परिक निवास में झोपड़ी व कच्चे मकानों की अधिकता विद्यमान है।

l|>k0 **(Suggestions)**&

- सुझाव के तहत हम उन तथ्यों को आधार बनायेंगे जहाँ थारू जनजातीय जीवन में काफी कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। हम अधिक समस्याग्रस्त तथ्यों पर विचार व्यक्त कर रहे हैं।

- शिक्षा के क्षेत्र में हमने देखा कि जनजातीय लोगों के पास प्राथमिक विद्यालयों की उपलब्धता तो ठीक है लेकिन माध्यमिक विद्यालय एवं महाविद्यालयों की उपलब्धता कम है जिसमें इनकी शिक्षा व्यवस्था प्रभावित होती है। यदि थारू क्षेत्रों में माध्यमिक और महाविद्यालयों की उपलब्धता बढ़ायी जाये तो इनके शैक्षिक स्तर में सुधार हो सकता है। जनजातीय लोगों में भी उच्च शिक्षा के प्रति रूझान पैदा करके इनकी शिक्षा व्यवस्था में सुधार लाया जा सकता है।
- ज्यादातर थारू जनजातियों का व्यवसाय कृषि एवं मजदूरी ही है। पशुपालन में भी कुछ खास दिलचस्पी नही है। इन लोगों को सरकारी अनुदान के प्रति सकारात्मक सोच बढ़ाकर पशुपालन के प्रति जागरूक करना चाहिए। पशुपालन से इनमें पारम्परिक व्यवसाय कृषि और मजदूरी में मदद मिलेगी। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि इनकों पशुपालन के प्रति जागरूक करने की आवश्यकता है।
- अधिकतर थारू जनजातियाँ मदिरापान करती हैं जिससे इनके ऊपर ऋणग्रस्ता बढ़ रही है, बिमारियों से ग्रसित हो रहे हैं, इस बात से थारू समुदाय को जागृत करने की आवश्यकता है जिससे इनकी स्वास्थ्य व्यवस्था में भी सुधार होगा।
- यदि सड़कों की मरम्मत और निर्माण कार्य की समीक्षा की जाय तो पता चलता है कि सड़कों को जितनी जल्दी हो सके मरम्मत और निर्माण कार्य को पूरा किया जाए। जिससे इनके आवागमन सुलभ हो सकें।
- जिन जगहों में पुल की अनिवार्यता महसूस होती हो वहाँ पुल निर्माण करके दुर्गम स्थानों पर आवागमन को सुलभ किया जाए।
- जो योजनाएँ जनजातियों के लिए कार्यरत हैं उनके बारे में थारू लोगों को भी परिचित करवाया जाय जिससे ये लोग भी उन योजनाओं का अधिक से अधिक लाभ उठा सकें।

- राज्य सरकार एवं केन्द्र सरकार द्वारा जो कल्याणकारी योजनाएँ जैसे कि वृद्धा पेंशन, आवास योजना हर घर शौचालय योजना आदि के लिए जो पात्र हैं उनको अभियान चलाकर जानकारी दी जाए जिससे ये लोग भी उन सुविधाओं का लाभ उठा सकें।

lkekU;hdj.k (Normalization)

प्रस्तुत अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षों से यह स्पष्ट होता है कि–

1. थारू जनजातीय लोगों का रहन–सहन जंगलीय एवं दुर्गम स्थानों में होने के कारण विकास धीमी गति से हो रहा है। क्योंकि यातायात एवं संचार की सुविधा अभी पूर्ण रूप से संचालित नहीं हो पायी है।
2. थारू लोग आलसी प्रवृत्ति रखते हैं इसलिए परिवर्तन की दिशा में पीछे होते जा रहे हैं जो इनके सम्पूर्ण जीवन क्षेत्र को प्रभावित कर रहा है।
3. इस जनजातीय क्षेत्र में लगभग 80 प्रतिशत लोग कृषि एवं मजदूरी पर आश्रित हैं अन्य व्यवसायों की उपलब्धता सीमित है इसलिए पलायन को प्राथमिकता देना इनकी मजबूरी बनती जा रही है।
4. शिक्षा के क्षेत्र में थारू जनजातीय लोग काफी पीछे हैं जिसका मुख्य कारण यह है कि इस क्षेत्र में प्राथमिक विद्यालय तो लगभग सभी गाँवों में मौजूद है लेकिन माध्यमिक विद्यालय एवं महाविद्यालय लगभग 10–15 किमी0 की दूरी पर अवस्थित हैं जिसके कारण इन लोगों की उच्च शिक्षा प्रभावित हो रही है।
5. थारू जनजातीय लोगों के स्वास्थ्य पर हानिकारक एवं नशीली वस्तुओं का सेवन, असंतुलित भोजन एवं रहन–सहन में साफ–सफाई की कमी स्पष्ट दिखाई देती है। जिसके कारण इनको बिमारियों का सामना करना पड़ता है।
6. राज्य सरकार एवं केन्द्र सरकार द्वारा प्रायोजित अनेक योजनाओं का लाभ उठाने में पूरी तरह सक्षम नहीं हैं जिसका सबसे बड़ा कारण इनकी आलसी प्रवृत्ति है।